श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❁ छोटा कयामतनामा ❁

मोमिन दुनीका बेवरा

जो नूर पार अर्स अजीम, ए जो बेवरा कयामत का।
मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका।। १ ।।

अक्षर के पार परमधाम है और कयामत के विवरण दोनों बातों की जानकारी मोमिनों को है। मोमिन अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं और दुनियां वाले मिटने वाले संसार के हैं। इन दोनों में यही फर्क है।

जब लाहूत से रूहें उतरीं, कह्या अलस्तो बे रब कुंम।
नासूत जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम।। २ ।।

जब परमधाम से रूहें खेल में उतरीं तो श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा "अलस्तो बे रबकुंम" मैं ही एक तुम्हारा खाविंद हूं। मृत्युलोक के खेल में जाकर तुम मुझे भूल मत जाना।

तब रूहों बले कह्या, हम भूलें नहीं क्योंए कर।
तुम साहेद किए रूहें फरिस्ते, पल रेहे न सकें तुम बिगर।। ३ ।।

तब रूहों ने "बले" कहकर जवाब दिया, अर्थात् निश्चित ही आप हो हमारे खाविंद हैं। हम किसी तरह से भी आपको भूलेंगे नहीं। आपने हम रूहों के लिए असराफील फरिश्ते को गवाह बनाया है। हम आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकते।

तुम खावंद हमारे सिर पर, अर्स अजीम बका वतन।
हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन।। ४ ।।

आप हमारे धनी हैं, हमारे रक्षक हैं, अखण्ड परमधाम हमारा घर है। हम अखण्ड सुखों को कैसे भूल जाएंगे, जबकि हमारी परआतम आपके चरणों तले बैठी है।

हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान।
भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने वायदा किया कि मैं अपने माशूक श्यामा महारानी को भेजूंगा और उनके साथ जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजकर तुम्हें जगा लूंगा। श्यामा महारानी तुम्हें सब पहचान कराएंगे।

हाथ रसूल के फुरमान, रूह अल्ला साथ इलम।
हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम।। ६ ।।

रसूल साहब के हाथ कुरान और श्यामा महारानी के हाथ जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजूंगा। श्यामा महारानी श्री राजजी के हुकम से सब परदे हटाकर मेरा दर्शन कराएंगी।

Nijanand App

तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार।
रूहें फरिस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार।।७।।

मुहम्मद की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी आएंगी और वह अलग-अलग तरीके से ज्ञान देंगी। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को श्री राजजी की लिखी हुई गवाहियां मिल जाएंगी।

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब।।८।।

बसरी, मलकी और हकी तीनों के जुदा-जुदा खिताब (उपाधियां) हैं। इनमें से बसरी सूरत कुरान का ज्ञान लाई। मलकी सूरत तारतम ज्ञान की कुंजी लाई। तीसरी हकी सूरत कुरान के छिपे रहस्यों को खोलकर ज्ञान देगी।

लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर।
दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर।।९।।

श्री राजजी महाराज ने यह बातें इशारतों में लिखकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतों के द्वारा भेजी हैं। मूल-मिलावा की गुझ (गुह्य) बातों को इनके बिना दूसरा कोई जाहिर नहीं कर सकेगा।

हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेंगे सब।
ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब।।१०।।

आप हजरत श्री प्राणनाथजी महाराज आ गए। उनके साथ सब शक्तियां आ गईं और वह अब सबको साथ ले चलेंगे। कुरान में जो श्री राजजी महाराज ने लिखकर भेजा था, वह कभी झूठा नहीं हो सकता।

चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल।
सो भेले दुनीके क्यों चले, जो उमत अर्स असल।।११।।

लैल तुल कदर के पहले तकरार बृज से चले तो अपनी आत्माओं को साथ लेकर रास में गए और बाकी ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया। ब्रह्मसृष्टि अखण्ड है और संसार के जीव नाशवान हैं, इसलिए यह दोनों इकट्ठे नहीं रह सकते।

गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर हूद तोफान।
बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान।।१२।।

तूफान-ए-हूद (बृज) में गोवर्धन पर्वत के तले अपने मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने स्वयं बचाया। दूसरी बार तूफान-ए-नूह में योगमाया की नाव बनाकर, अर्थात् योगमाया के सहारे अपने मोमिनों को नित्य वृन्दावन में पहुंचाकर बचाया।

अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो विचार।
पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार।।१३।।

अब तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में आए हैं। इसकी हकीकत सुनो, क्योंकि बिना पहचान के मोमिन हों या ईश्वरीसृष्टि, क्या कर सकते हैं?

Nijanand App

या अर्स आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत।
गिरो खासी उतरी अर्स से, और दुनी पैदा जुलमत।। १४ ।।

अपनी पहचान या अपने घर की पहचान या श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों के मूल सम्बन्ध की पहचान केवल ब्रह्मसृष्टियों को ही है, जो परमधाम से उतरी हैं। बाकी दुनियां सब निराकार से पैदा है।

दिल मोमिन अर्स कह्या, सैतान दुनी दिल पर।
क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत यों कर।। १५ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है और दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस (नारद) की बादशाही है। इससे दुनियां वाले और मोमिन एक साथ नहीं चल सकते। इनके बीच यह ही फर्क है।

ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन।। १६ ।।

दुनियां वालों को न तो अखण्ड की पहचान है और न ही श्री राजजी महाराज से इनका कोई सम्बन्ध है, इसीलिए यह मोमिनों के दुश्मन हैं। मोमिन श्री राजजी महाराज को नहीं छोड़ते। दुनियां वाले दुनियां को नहीं छोड़ते।

निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउं गिरो के पर।। १७ ।।

जिनके सम्बन्ध में ही फर्क है वह एक साथ कैसे चल सकते हैं? दुनियां वाले जमीन पर चलते हैं, अर्थात् कर्मकाण्ड से चलते हैं और मोमिन आसमान पर चलते हैं, अर्थात् वह परमधाम का चितवन करते हैं। दुनियां पैरों से चलती है। मोमिन इश्क और ईमान के परों से उड़ते हैं।

एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए।
पट खोल पोहोंचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनी पे न कोए।। १८ ।।

मोमिनों के दोनों तरफ दो पंख लगे हैं। एक तरफ ईमान और दूसरी तरफ इश्क। इनके पास कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान है जो अज्ञानता के अन्धकार को हटाकर परमधाम पहुंचाता है। इन तीनों इश्क, ईमान और कुलजम सरूप की वाणी में से दुनियां वालों के पास एक भी नहीं है।

ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल।
लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल।। १९ ।।

दुनियां की चाल (रहनी) शरीर के वास्ते होती है। मोमिन आतम की चाल चलते हैं। दुनियां और मोमिनों के बीच इतना फर्क कुरान में लिखा है।

कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत।
दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत।। २० ।।

दुनियां का दिल मजाजी (झूठा) है जो निराकार से आगे नहीं जाता। मोमिनों का दिल सच्चा है जो परमधाम की बातें सोचते हैं। कुरान में इन दोनों का इतना फर्क बताया है।

Nijanand App

इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनीसों मिल।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल।। २१ ।।

इनमें जो परमधाम की रूहें होंगी, वे दुनियां के साथ मिलकर कैसे चल सकती हैं? कहनी, करनी और रहनी तीनों ही, दोनों के अलग-अलग हैं, वह बदल नहीं सकते।

जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन
दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन।। २२ ।।

जो मोमिन दुनियां के रास्ते पर चलते हैं, वह परमधाम की रूहें नहीं हैं। दुनियां का घर निराकार है और मोमिनों का घर अखण्ड परमधाम है।

पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत।
अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत।। २३ ।।

पहले रसूल साहब अकेले आए थे, इसलिए शरीयत का झण्डा लगाया। अब ब्रह्मसृष्टि आ गई है और कुलजम सरूप (मारफत का ज्ञान) की वाणी की पहचान हो गई है, इसलिए श्री राजजी इनको अकेला नहीं छोड़ेंगे।

पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोड़ी महंमद।
यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद।। २४ ।।

पहले एक गुलाम जैद था जिसने रसूल साहब का साथ नहीं छोड़ा, जबकि उनके यार अबूबक्र, उमर, उस्मान और अली उनके बताए रास्ते पर नहीं चल सके। इसकी गवाही मसनवी किताब में है।

जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल।
आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल।। २५ ।।

जो ऐसी रहनी में रहते हैं उनको यहूदी कैसे कहा जाए? यहूदी तो वह गुलाम जैद है, जिसने मुहम्मद साहब के रास्ते को नहीं छोड़ा।

तिन खोली रूह नजर, जाए हकें बखसी बातन।
इन राह सोई चलसी, जो हक अर्स दिल मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिसको कुरान के बातूनी रहस्यों को खोलने का अधिकार दिया है, उन श्री प्राणनाथजी ने आत्मा की नजर खोल दी है। अब इनके बताए रास्ते पर वही चलेंगे जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

दिल मजाजी जो कहे, ताको अर्स दिल कबूं न होए।
सो आए न सके वाहेदत में, जिन दिल अबलीस कह्या सोए।। २७ ।।

जिनके दिल मजाजी (झूठे) हैं उनके दिल श्री राजजी महाराज का अर्श कभी नहीं हो सकते और इसलिए यह कभी भी मूल-मिलावा में नहीं आ सकते। दुनियां वालों के दिलों पर अबलीस की बैठक है।

रसूलें राह बताई मेयराज में, अर्स लेसी सोई मोमिन।
देखाई चढ़ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन।। २८ ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात्रि में परमधाम में आने-जाने का रास्ता बताया और श्री राजजी महाराज के साथ मूल-मिलावा में हुई बातों को बताया। अब परमधाम को और इन वचनों को जो लेगा, वही मोमिन है।

Nijanand App

मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन।
हकें कह्या उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन।। २९ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के बीच जो बातें खेल में उतरते समय हुई थीं, वह सब रसूल साहब ने मेयराज में सुनीं और आकर कुरान में जाहिर कीं।

जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह।
इत दिल मजाजी आए न सके, जित अबलीस दिलों पातसाह।। ३० ।।

श्री राजजी की खिलवत (मूल-मिलावा) में रसूल साहब ही पहुंचे। यहां के झूठे दिल वाले जिनके दिलों में अबलीस की बादशाही है, वह (परमधाम) नहीं आ सकते।

भूले करे जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन।
मारफत सूरज उगे बिना, क्यों देखें बका अर्स तन।। ३१ ।।

दुनियां में ब्रह्मसृष्टि आकर भूल गई और जाहिरी देवी-देवताओं और गादीपतियों की पूजा करने लगी। उनको जब तक कुलजम सरूप के मारफत का ज्ञान नहीं मिलता, तब तक वह अखण्ड परमधाम में अपनी परआतम को कैसे देख सकते हैं?

तो दें बड़ाई जाहेर परस्तों को, जो समझे नहीं हकीकत।
हक इलम आए बिना, तो क्यों समझे मारफत।। ३२ ।।

इसलिए दुनियां वाले हकीकत के ज्ञान को नहीं समझते और भूलकर अपने आचार्यों की महिमा गाते हैं। जब तक कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिल जाती, तब तक मारफत की बातों को कैसे समझ सकते हैं?

सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल।
बका तरफ न पावे अर्स की, ए फानी बीच अंधेर असल।। ३३ ।।

शरीयत (कर्मकाण्ड) के मानने वाले फर्ज की बन्दगी दिखावे की झूठी बन्दगी करते हैं, इसलिए इनके झूठे दिल मजाजी दिल कहलाते हैं। इनको अखण्ड परमधाम की सुध नहीं है। यह झूठी दुनियां को ही सच्चा समझे बैठे हैं।

दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन।
हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन।। ३४ ।।

मोमिन जिनके दिल को हकीकी कहा है, वह बातूनी अर्थ लेते हैं। वह सच्चाई के साथ इलम और इश्क लेकर श्री राजजी महाराज की हुजूरी बन्दगी करते हैं। उनकी रहनी अखण्ड घर के लिए होती है।

फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आये यार।
देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोड़ें असल अर्स प्यार।। ३५ ।।

अब दूसरी बार हुकम के स्वरूप मुहम्मद साहब और श्री श्यामाजी दोनों मिलकर श्री प्राणनाथजी के अन्दर हैं और वही सखियां भी फिर सुन्दरसाथ के रूप में आई हैं। यह श्री प्राणनाथजी के अन्दर पांचों शक्तियों (धनीजी का जोश, श्यामाजी, आत्म-अक्षर, जागृत बुद्धि और हुकम) के दर्शन करती हैं। यह सुन्दरसाथ अपने श्री प्राणनाथजी को जिनसे अर्श का प्यार है, सम्बन्ध है, उन्हें कैसे छोड़ दें?

Nijanand App

कहे महंमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन माहें।
ए वाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रेहेवे नाहें।। ३६ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि जब मैं परमधाम चलूंगा, तो एक पल के अन्दर मेरे सुन्दरसाथ आकर मिल जाएंगे, क्योंकि कुलजम सरूप की वाणी से जागृत होकर कोई अलग नहीं रह सकता। यही मोमिनों की पहचान है।

मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए।
तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरोकी होए।। ३७ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि जब मैं घर चलूंगा तब सब सुन्दरसाथजी आकर मेरे साथ मिल जाएंगे। तब सब ब्रह्मसृष्टियों की प्रशंसा होगी।

इत मैं चलो जो अव्वल, कर यारोंसों सहूर।
तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर।। ३८ ।।

यहां संसार से मैं अपने मोमिनों से विचार करके जब घर चलूंगा, तो निराकार के पार, तिन पार के भी पार, तक खूब महिमा गाई जाएगी।

खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार।
ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इस्क चलो हादी लार।। ३९ ।।

तब खूब खुशियां मनायी जाएंगी और संसार में मोमिनों की बहुत शोभा होगी। इसलिए हे सुन्दरसाथजी! इश्क का प्याला लो और अपनी आतम को जागृत करके श्री प्राणनाथजी के साथ अपने घर चलो।

पोहोंचे नहीं अंग दिल के, ताथें रूह अंग लीजे जगाए।
तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए।। ४० ।।

तुम्हारे यहां के मन की चाहनाएं परआतम को नहीं पहुंचती हैं, इसलिए पहले अपनी रूह के अंगों को सावचेत (सावधान) करो। जब तक अपने अन्दर के अहंकार को समाप्त नहीं करोगे, तब तक यह संसार नहीं छूटेगा।

जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान।
आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान।। ४१ ।।

जब रूह के अंग जागृत हो जाएंगे तब तुम समझना कि मेरी परआतम जाग गई है और उसे पूरी पहचान हो गई है। तभी तुम्हारी आतम को परआतम के सुख यहां मिलेंगे।

जो अंग होवे अर्स की, उपजत नहीं अंग आहे।
बारे हजार रूहन में, सो काहेको आप गिनाए।। ४२ ।।

जो परमधाम की आतम है और जिसकी परमधाम में परआतम बैठी है, यह पहचान कर जिसको इस वियोग में अंग से ठंडी आहें नहीं निकलतीं वह बारह हजार सुन्दरसाथ में अपने को न समझें।

Nijanand App

करवट लेते सूते नींदमें, नाला मारत जे।
याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के।।४३।।

और जो सोते समय भी करवट लेने में भी आहनाला (हाय श्री राजजी) की ठण्डी सांसें लेते हैं, इससे याद किए बिना ही आशिक मोमिन के तन में माशूक श्री राजजी महाराज के सुख का स्वाद मिलता है।

जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबूं ना और सों होए।
इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए।।४४।।

जो मोमिन अपने धनी के लिए कर सकते हैं, वह दुनियां वाले कभी भी नहीं कर सकते। जिसकी आतम यहां खेल में कुलजम सरूप की वाणी से जागृत हो जाती है, उसे संसार में तथा परमधाम में दोनों जगह मान मिलेगा।

देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखण्ड।।४५।।

श्री प्राणनाथजी का वियोग देखकर जो शरीर को जिन्दा रखता है, उनकी अक्ल को धिक्कार है। वह अखण्ड परमधाम के रहने वाले नहीं हैं।

ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान।
ए मोमिन रूहें जान हीं, जाको अर्स दिल कह्यो सुभान।।४६।।

जो ऊपर की दृष्टि से दोस्ती का भाव रखते हैं, इनको श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान नहीं है। श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को मोमिन ही पहचानते हैं, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अपना अर्श करके बैठे हैं।

रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल।।४७।।

परमधाम की जो असल ब्रह्मसृष्टि है, वह श्री प्राणनाथजी का वियोग एक पल भी सहन नहीं कर सकती। श्री प्राणनाथजी महाराज के चलने की खबर सुनने से पहले ही अपने तन को छोड़ देगी।

दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान।
दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान।।४८।।

जिनको कुलजम सरूप की वाणी मिल गई है, वह हकीकी दिल वाले मोमिन संसार में नहीं रह सकते। जिनके दिल मजाजी (झूठे) हैं, उनका मोमिनों से जमीन आसमान का अन्तर है।

कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफली का मलकूत।
जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत।।४९।।

अपने घर को कोई नहीं छोड़ता। झूठी दुनियां वाले बैकुण्ठ जाते हैं। ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम और ब्रह्मसृष्टि परमधाम में जाती है।

बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान।
दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान।।५०।।

कुरान में यह विवरण स्पष्ट लिखा है, परन्तु अलग-अलग ठिकानों पर। कुरान में जिसको मुरदार कहा है, यह झूठे दिल वाले इस बात को कैसे समझ सकते हैं?

Nijanand App

ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक।
ए पानी न पोहोंचे दिलको, क्या होए ऊपर धोए खाक।।५१।।

संसार के इस पानी से वुजू करने से, अंग धोने से कोई पाक नहीं हुआ, क्योंकि यह पानी दिल को साफ नहीं करता। झूठे तन को ऊपर के धोने से क्या फायदा?

किताबों सबों यों कह्या, अर्सें पोहोंचे रूह पाक।
दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाक में खाक।।५२।।

सभी धर्मशास्त्रों में कहा है कि जिनकी आतम पाक है, वही परमधाम जाती है। संसार के झूठे तन और दिल वाले यहीं मिट्टी में मिल जाते हैं।

खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल।
कोई देखे सहूर करके, तो पोहोंचे हादी कदमो नसल।।५३।।

संसार में जीवों को कुछ नहीं मिलता। यदि विचार करके देखो तो रूहें अपने श्री राजजी महाराज के चरणों में परमधाम पहुंच जाती हैं।

गुम हुई जिनोंकी अकलें, होए नजीक न तिनों हक।
जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक।।५४।।

जिनकी बुद्धि माया में भटकी है श्री राजजी उनके नजदीक नहीं होते। ऐसे लोग जान-बूझकर संसार को नहीं छोड़ते और न ही वह मोमिनों की रहनी में चल सकते हैं।

कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम।
रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम।।५५।।

यदि कोई मुख से कुछ कह भी देता है तो कहने मात्र से कोई काम नहीं होता। रहनी के बिना आतम जागृत नहीं होती। रहनी ही आतम को परआतम से मिलाती है। कहनी तो केवल जिह्वा तक रहती है।

केहेनी सुननी गई रातमें, आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन।।५६।।

कहने और सुनने का जमाना अज्ञान का रास्ता था, जो समाप्त हो गया। अब रहनी का दिन आया है। बिना रहनी के कहनी से कुछ लाभ नहीं होता। अखण्ड परमधाम और परआतम की पहचान बिना रहनी के होती नहीं है।

केहेनी करनी चलनी, ए होंए जुदियां तीन।
जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ए तो इलम आकीन।।५७।।

कहनी, करनी और रहनी तीनों अलग-अलग हैं। इसे यह संसार की झूठी दुनियां कैसे जान सकती है? इसकी पहचान उन्हीं को होगी जिनके पास कुलजम सरूप की वाणी और यकीन है।

अर्स सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक।
रूहअल्ला महंमद मेंहेंदीने, उड़ाए दई सब सक।।५८।।

परमधाम की सब हकीकत और श्री राजजी महाराज की पहचान श्री श्यामा महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से सबके संशय मिटाकर पहचान करा दी है।

Nijanand App

सूर ऊग्या मारफत का, महंमद मेंहेंदी दिल।
नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रातके मिल।।५९ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के इश्क और इल्म से भरे गंजान गंज दिल से कुलजम सरूप जागृत बुध के ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से संसार में जो ब्रह्म और माया, जीव और आतम, सत और असत मिले हुए थे, अलग-अलग हो गए (खीर नीर का हुआ निबेरा)।

कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात।
अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात।।६० ।।

अज्ञान के अंधेरे में सत्य और झूठ, कुफ्र और ईमान की पहचान नहीं थी। अब मोमिन संसार में जाहिर हो गए हैं। सबको पहचान हो गई है, जानकारी मिल गई है।

ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक।
सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा इलम हक।।६१ ।।

दुनियां वालों को अब तक ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि, काफिरों तथा मुनाफिकों (दोगलों की) पहचान नहीं थी। अब कुलजम सरूप की वाणी ने सबकी पहचान करा दी।

हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर।
कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन असौं सूर।।६२ ।।

कुलजम सरूप की वाणी ने कुरान के सभी रहस्यों को खोल दिया और मोमिनों के अन्दर से माया की चाहना हटाकर ईमान भर दिया, जिसके द्वारा मोमिनों के दिल से क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के भेद खुलने लगे।

खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद।
सब खोले मगज मुसाफ के, माहें छिपे हुते जो भेद।।६३ ।।

कुलजम सरूप की वाणी ने वेद-कतेब तथा सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य खोल दिए और कुरान के छिपे रहस्यों को भी खोल दिया।

जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों माहें।
इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहें।।६४ ।।

दुनियां में जितने भी पैगम्बर हुए हैं, सब यहूदियों में हुए हैं। यहां तक कि इस्लाम धर्म के चलाने वाले रसूल साहब और मोमिन यहूदियों में आए हैं। कर्मकाण्ड और शरीयत पर चलने वाले जाहिरी लोगों में नहीं आए हैं।

जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए अंबिए पैगंमर।
सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून सहूर कर।।६५ ।।

कुरान में औलिया, अंबिया और पैगम्बरों की महिमा गाई है जो बातूनी विचार करके देखो, तो यह सब यहूदी थे।

जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए।।६६ ।।

कुरान के बातूनी अर्थ जिन्होंने लिए, वही पैगम्बर कहलाए। कुरान के बातूनी अर्थ जाने बिना कोई औलिया, अंबिया नहीं बन सकता।

Nijanand App

जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन।।६७।।

दुनियां के काजी, मौलवी, औलिए अंबिए सब अपने को बड़ा समझते हैं और कुरान के छिपे रहस्यों को जानते नहीं हैं। जब तक कुलजम सरूप की वाणी नहीं आई, तब तक किसी को बातूनी भेद नहीं खुले।

कह्या जाहेर माहें दुनियां, और बातून माहें हक।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक।।६८।।

दुनियां वाले कुरान के जाहिरी अर्थ लेते हैं, जबकि बातूनी अर्थों में श्री राजजी महाराज की पहचान होती है। ऐसा वेद, कतेब कहते हैं। कुलजम सरूप की वाणी भी यही बतलाती है।

ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत।
रात मेट के दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत।।६९।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के दिल से जब कुलजम स्वरूप की वाणी जाहिर हुई तो कुरान के छिपे रहस्य खुल गए। अज्ञान के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला हो गया।

कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन।
सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अर्स तन।।७०।।

श्री राजजी महाराज ने अखण्ड परमधाम में रूहों से वायदा किया था। वह समय अब आ गया। परमधाम और परआतम की पहचान सबको हो गई।

एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए तरफ हक।।७१।।

दुनियां में एक तो अहंकार था दूसरे संशय था, इसलिए श्री राजजी महाराज की तरफ पीठ देकर सबकी रहनी निराकार के वास्ते ही थी।

सो खुदी काढी जड़मूल से, हुए जाहेर हक इलम।
सक सुभे कछू ना रही, हुई सब में एक रसम।।७२।।

अब श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप की वाणी आ गई है, जिसने अहंकार को जड़ से समाप्त कर दिया। किसी तरह का संशय भी नहीं रह गया। अब सभी एक पारब्रह्म के पूजक हो गए हैं।

जुदी जुदी जातें कहावतीं, फैल करते जुदे नाम धर।
सो रात मेट के दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर।।७३।।

दुनियां अलग-अलग जातियों में बटी थी और अलग-अलग देवी-देवताओं की पूजक थी। अब कुलजम सरूप की वाणी से सबका अन्धकार मिटकर ज्ञान का सवेरा हो गया।

जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अर्स हक।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक।।७४।।

जिनकी आत्मदृष्टि खुल गई, वही श्री राजजी महाराज और परमधाम को पहुंचेंगे। जिनकी दुनियां की जाहिरी दृष्टि नहीं छूटी, वह दुनियां के अन्दर पड़े संशय में ही डूबे रहेंगे।

Nijanand App

जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन।
और हक इलम खोल्या आखिरी, ए बीच असल अर्स तन।।७५।।

जिनको हकीकत और मारफत के ज्ञान (कुलजम सरूप) की पहचान हो गई, वह अपने धनी श्री राजजी का एक पल भी वियोग सहन नहीं कर सकते। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने मोमिनों के बीच कुलजम सरूप की वाणी को खोल दिया है।

जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम।।७६।।

जिसको कुलजम सरूप की वाणी ने जगा दिया है वह जागकर बैठ गया। अब श्री प्राणनाथजी के चरणों को वह एक पल भी नहीं छोड़ेगा।

सब साहेदी दई जो हदीसों, और अल्ला कलाम।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम।।७७।।

कुरान में और हदीसों में जो गवाहियां दी हैं, उन गवाहियों को लेकर भी जो पीछे रह जाए, तो उसे न प्राणनाथजी की और न श्री राजजी महाराज की मेहर प्राप्त होगी।

जिनों लदुन्नी पोहोंचिया, लिया बका अर्स भेद।
सो क्यों गिरोसों जुदा पड़े, जाए परे कलेजे छेद।।७८।।

जिनको कुलजम सरूप साहेब की वाणी मिल गई और अखण्ड परमधाम के रहस्यों को जान लिया, वह अपनी मोमिनों की जमात से अलग नहीं हो सकते, क्योंकि यह वाणी उनके कलेजे में चुभ गई है।

जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अर्स पेहेचान।
सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उड़ी निदान।।७९।।

जिनको हकीकत-मारफत के भेद कुलजम सरूप की वाणी से खुल गए हैं, उनको परमधाम की पहचान हो गई। जब उनसे माया छूट गई तो फिर वह परमधाम का वियोग कैसे सहन कर सकते हैं?

ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक।
इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक।।८०।।

जब कुलजम सरूप की वाणी के द्वारा मोमिनों को परमधाम की सब न्यामतें मिल गईं तो फिर उनके अन्दर जरा भी संशय नहीं रहेंगे और निश्चित ही वह परमधाम पहुंचेंगे।

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार।
अन्तर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार।।८१।।

जिनको कुलजम सरूप की वाणी की पहचान हो गई, उन्हें सब कुछ दिखने लगा। वह अक्षर के पार परमधाम पहुंच गए और श्री राजजी महाराज से उनका कुछ अन्तर नहीं रह गया।

जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए।
हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए।।८२।।

जिसको श्री राजजी महाराज के कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिली तो उस पर माया का परदा पड़ा ही रहा। श्री राजजी महाराज उनको सेहेरग से नजदीक थे, पर कुलजम सरूप की वाणी पर यकीन न होने से दूर भटक गए।

Nijanand App

रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम।
सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम।। ८३ ।।

रूह का ठिकाना मूल-मिलावा परमधाम में है, परन्तु जिन रूहों को संसार में कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिली और न श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही पहचान हुई, वह असल रूह होते हुए भी निराकार के अंधेरे में भटक गईं।

लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें।
जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें।। ८४ ।।

जिन्होंने कुलजम सरूप की वाणी को ग्रहण कर लिया, वह संसार के झूठे तनों में कैसे रह सकती हैं? जिन्होंने अपने मूल स्वरूप को परमधाम में देख लिया है, वह उठकर खड़ी हो जाएंगी। माया में सोएंगी नहीं।

वाको तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार।
मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार।। ८५ ।।

ऐसी रूहों को ज्ञान का सवेरा हो गया और उन्हें अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज का दर्शन भी प्राप्त हुआ। श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरते समय जो वायदे किए थे, वह सभी उन्हें याद आ गए।

जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन।
आया असल तन में, बीच बका वतन।। ८६ ।।

जिसको कुलजम सरूप की वाणी से, कयामत के निशान जाहिर हो गए, तो वह सवेरा होने पर अब कैसे सोएगा? वह परमधाम में अपनी परआतम में जाग जाएगा।

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें।
पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें।। ८७ ।।

यदि कोई रूह इस संसार में जागृत होकर अपना तन पहले छोड़ देती है, तो वह आतम अपने जीव को लेकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में पन्नाजी पहुंच जाती है, क्योंकि वही चरण ही उसका असल ठिकाना है। पांच तत्व का झूठा शरीर पांच तत्व में मिलकर खत्म हो जाता है।

यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत।
तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत।। ८८ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से इस तरह से समझाने पर भी यदि किसी को समझ नहीं आती, तो ऐसे झूठे दिल वाले दुनियां के जीवों को चर्चा मत सुनाओ।

काफर मुसलिम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन।
तो अर्स तन और जिमीके, क्यों पाइए कुफर आकीन।। ८९ ।।

यदि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि तीनों अलग-अलग न होते तो परमधाम के तनों में तथा दुनियां के तनों में यकीन और कुफ्र के भी भेद का पता कैसे लगता?

Nijanand App

अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन।
ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन।। ९० ।।

अखण्ड परमधाम में मोमिनों के तन हैं और दुनियां वालों के तन झूठे संसार में है, इसलिए इनकी कहनी, रहनी और चलन एक सी कैसे हो सकती है?

जो हक अर्स दिल मोमिन, मिल के करो सहूर।
कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला नूर।। ९१ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, विचार करके देखो। वह रूहें अक्षर के पार परमधाम में रहने वाली हैं। बाकी सब दुनियां निराकार की है।

मोमिन और दुनी के, चाहिए सब विध जुदागी।
दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अर्स अजीम की।। ९२ ।।

मोमिनों में और दुनियां वालों में सब तरह से अन्तर होना चाहिए, क्योंकि दुनियां निराकार से पैदा है और मोमिन परमधाम से उतरे हैं।

ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखिरत।
चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करे हक सिफत।। ९३ ।।

इन सब बातों को उस समय पर याद रखना जिस समय दुनियां को तुम्हारे हाथ से कायम होने का फल मिलेगा, अर्थात् अखण्ड मुक्ति मिलेगी। यदि अन्त समय का इतना फर्क न होता, तो हक श्री राजजी महाराज रूहों की महिमा क्यों गाते?

मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमिनों मौत फरक।
दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागें दिल अर्स हक।। ९४ ।।

संसार में मरते तो सभी हैं, परन्तु मोमिनों के शरीर छोड़ने में भी अन्तर होता है। दुनियां शरीर छोड़कर निराकार में मिल जाती है और मोमिन जागृत होने पर अपने धनी के चरणों में पहुंच जाते हैं।

जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत।
कह्या काफर स्याह मुंह आखिर, मुख मोमिन नूर सुपेत।। ९५ ।।

जो मोमिन होंगे उनके मुख उज्ज्वल होंगे और जो काफिर होंगे उनके मुंह काले होंगे, इसलिए मोमिनों को संसार में सावधानी से चलना चाहिए।

मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार।
ए अर्स दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार।। ९६ ।।

यह संसार झूठे दिल वालों का मेला है। सब एक-दूसरे के देखा-देखी कर्म करते हैं। मोमिनों के दिल हकीकी हैं, इसलिए नाचीज दुनियां वालों की तरह नहीं चलेंगे।

बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अर्स तन।
पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन।। ९७ ।।

संसार में नष्ट होने वाले जीवों के बीच में मोमिन जिनके तन परमधाम में हैं, नहीं रह सकते। जिनका घर ही परमधाम है, वह संसार में एक पल के लिए भी कैसे रहें?

Nijanand App

ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार।
ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार।।९८।।

यह झूठे दिल वाले दुनियां के लोग और इनके सिरदार देवी-देवता अखण्ड को नहीं पहुंच सकते। खुदा ने ऐसे वचन सब ग्रन्थों में कह रखे हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंदसे, ए दुनी पैदा जुलमत।
सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत।।९९।।

मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं। दुनियां निराकार से पैदा है। मोमिन सत्य हैं। दुनियां झूठ है। आपस में यह कैसे मिल सकते हैं?

सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों माहें।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें।।१००।।

सच्चे से सच्चे मिलते हैं। झूठे से झूठे मिलते हैं। जो जैसे होते हैं उनको वैसी ही संगति मिल जाती है। इसमें जरा भी धोखा नहीं है।

अर्स दिल मोमिन कह्या, दुनी दिल पर अबलीस।
ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस।।१०१।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। दुनियां के दिल में शैतान बैठा है, जो किसी का दोस्त नहीं है चाहे कोई अपना सिर भी क्यों न काट दे।

लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए।
चिरकीन जिमीसें निकसके, क्यों न लीजे बका खुसबोए।।१०२।।

परमधाम अखण्ड है। चौदह लोक नाशवान हैं। अब इन दोनों को तौलकर देखो तो समझ में आएगा। इस गन्दी जमीन से निकलकर अखण्ड परमधाम का आनन्द क्यों न लिया जाए?

जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक।
देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक।।१०३।।

कुलजम सरूप की संशय रहित वाणी की पहचान हो जाने पर भी यदि भूल करते हैं तो हे रूहो! दिल से विचार करके देखो। परमधाम में श्री राजजी को कैसे रिझाओगे?

जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक।।१०४।।

कुलजम सरूप की वाणी स्पष्ट कह रही है कि यदि मोमिन अपने गुण, इन्द्रियों की चाहना जीते जी समाप्त नहीं करेंगे तो क्या मुनाफिक (दोगले) लोग यह काम करेंगे?

फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमिन करें सहूर।
इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर।।१०५।।

कुलजम सरूप की वाणी सब रूहों के वास्ते कही है। मोमिन ही इसका विचार करेंगे। वह इस अज्ञानता से भरे अन्धकार वाले संसार से निकलकर परमधाम क्यों नहीं जाएंगे?

Nijanand App

हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अर्स राह।
मूल सरूप ले दिलमें, उड़ाए दीजे अरवाह।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज के आदेश को श्री प्राणनाथजी महाराज चला रहे हैं तो हम इनके बताए अनुसार परमधाम का रास्ता क्यों न लेवें? श्री राजजी महाराज के स्वरूप को दिल में धारण करके इस झूठे तन को उड़ा दो।

चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक।
पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजेकी लीक।। १०७ ।।

सब संसार को पता है कि मालिक परमात्मा के हुकम से ही यहां सबको चलना है। फिर भी अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके परमात्मा के बताए सत्य मार्ग पर कोई नहीं चलता। सब एक-दूसरे की देखा-देखी चलते हैं।

जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले परवस।
सब सावचेत सुरत बांधके, बीच उठिए अपने अर्स।। १०८ ।।

जो कुलजम सरूप की वाणी से जाग गया है, वह फिर दूसरे के अधीन होकर नहीं चलेगा। दुनियां की तरफ से सावचेत (सतर्क) होकर अपनी सुरता मूल-मिलावा में बांधकर जागृत हो जाएगा।

जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान।
मूल सरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान।। १०९ ।।

जो रूह यहां जाग जाएगी, उसकी यही पहचान होगी कि वह अपनी सुरता में इस मूल स्वरूप श्री राजजी को लेकर संसार छोड़ देगी।

भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन।
हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन।। ११० ।।

दुनियां वाले तुम्हारी भले कितनी ही प्रशंसा करें, परन्तु उसमें पहुंचकर अपने मूल तन को मत भूलो। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें जहां मूल-मिलावा में बैठी हैं उस अखण्ड परमधाम में जागृत हो जाओ।

जो मसलहत कर चलिए, अर्स रूहें मिल कर।
अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर।। १११ ।।

परमधाम की सभी रूहें मिलकर यदि विचार करके एक साथ चलें, तभी इस दुनियां से छुटकारा पाकर घर चलना सम्भव होगा। इसके बिना दुनियां नहीं छूटेगी।

अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर।
दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर।। ११२ ।।

परमधाम की रूहों को निश्चित ही जीते जी दुनियां वालों का साथ छोड़ना चाहिए, क्योंकि दुनियां वाले और रूहें दोनों एक साथ नहीं चल सकते। दुनियां वाले झूठी माया निराकार से हैं और रूहें श्री राजजी के नूरी अंग हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनों, मेहेर हक की आपन पर।
सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह की नजर।। ११३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे मोमिनो! सुनो, श्री राजजी महाराज की हमारे ऊपर बड़ी मेहर है। तुम अपने अंग-अंग में श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो तो तुम्हारी आत्मदृष्टि खुल जाएगी।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ११३ ॥

Nijanand App

बाब पैगंमरों का

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम।
पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम।। १ ।।

संसार में परमात्मा का पैगाम देने वाले जितने भी पैगम्बर, ज्ञानी हुए हैं, उनको जबराईल फरिश्ते से ही पैगम्बरी मिली है। यह अक्षरधाम की सीमा तक जाता है।

हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर।
आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर।। २ ।।

कुरान की हकीकत के ज्ञान से अक्षरधाम तक पहुंचा जा सकता है। आगे श्री राजजी महाराज के दिल के बातें कुलजम सरूप की मारफत सागर की वाणी में हैं।

हुआ मेयराज महंमद पर, तिनमें बका सब बात।
महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात।। ३ ।।

मुहम्मद साहब को मेयराज (दर्शन) हुआ। मेयराजनामा में वह सभी अखण्ड की बातें लिखी हैं। रसूल साहब श्री राजजी महाराज के सामने मूल-मिलावा में पहुंचे और वहां उन्होंने मोमिनों को बैठा देखा।

देखे मोती पूर नूर से, कह्या मुंह पर कुलफ तिन।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन।। ४ ।।

उन्होंने मोमिनों के इश्क भरे मुंह पर ताला लगा देखा। श्री राजजी महाराज ने कहा, हे मुहम्मद! तेरे दिल में, जब मैं वाणी, अर्थात् कुलजम सरूप दूंगा तब इनके मुंह के ताले खुलेंगे।

गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन।
देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन।। ५ ।।

हे मुहम्मद! तेरी जमात ने गुनाह कर लिया है और इसलिए इन मोमिनों के मुंह बन्द हैं। तुम अपने दाहिने हाथ पर श्री श्यामाजी महारानी को देखो। इनके मुंह पर भी ताला लगा है। यह वचन भी श्री राजजी महाराज ने अपने मुख से कहे।

किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर।
कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा, हे मुहम्मद! तू चिन्ता किस बात की करता है? अपने दाहिने हाथ पर श्री श्यामाजी को देखो। मोती (मोमिनों) को देखो जिनके मुंह पर ताला लगा है। तब सब बातें मुहम्मद साहब को समझ में आ गईं।

हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल।
ए जो दई फरामोसी खेलमें, जो उतरते मांग्या रूहों मिल।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम्हारी जमात ने गुनाह किया है, इसलिए इनके दिलों पर ताला लगा है। तुम्हारी इन रूहों ने मिलकर खेल मांग लिया है, इसलिए इनको फरामोशी दी है।

Nijanand App

कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत।
जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत।। ८ ।।

रसूल साहब ने पहले वहां सुन्दर वनों को देखा। फिर जवेर से जड़े जगमगाते हुए महलों को देखा। जमुनाजी के किनारे कई वृक्षों की सुन्दर सुगन्धि का आनन्द लिया।

देख्या हौज अर्स का, द्योहरियां गिरदवाए।
और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए।। ९ ।।

उन्होंने परमधाम के हौज कौसर को देखा और घेरकर आई द्योहरियों को देखा और मोतियों के समान चमकते हुए वनों को भी देखा।

इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान।
कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान।। १० ।।

यहां तक जबराईल फरिश्ता मुहम्मद के साथ रहा। फिर उसने कहा कि वह चौथे आसमान परमधाम में नहीं जा सकता।

महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम।
और कही हकीकत, आखिर आवने ईसा इमाम।। ११ ।।

इन वचनों ने मुहम्मद की साहेबी बतलाई है। आखिर के वक्त में इन्हीं वचनों ने रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के आने की भविष्यवाणी की है।

पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार।
दई कुंजी बका की, देखे लैलत कदर तीन तकरार।। १२ ।।

इस मृत्युलोक में श्री श्यामाजी महारानी को श्री श्यामजी के मन्दिर में दर्शन हुआ। वहां श्री राजजी महाराज ने उन्हें तारतम ज्ञान की कुंजी दी। जिससे उन्हें बृज, रास और जागनी (लैल तुल कदर के तीन हिस्से) का ज्ञान हुआ।

हक बैठे आए अंदर, पट अर्स दिए सब खोल।
जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज श्री श्यामा महारानी के तन में आकर बैठे और परमधाम के सारे दरवाजे खोल दिए। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की जो वाणी कही है, वह सब श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी को समझाई थी।

जो हुकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार।
और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से रसूल साहब ने शरीयत के तीस हजार हरफ जाहिर किए। दूसरे तीस हजार जाहिर करने का उनको अधिकार दिया और तीसरे तीस हजार जो गुझ (गुह्य) रखे थे, वह श्री राजजी महाराज ने श्यामाजी को बड़े प्यार से श्री श्यामजी के मन्दिर में समझाए।

अब कहूं रूहअल्लाह की, जिन दई महंमद साहेदी।
मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की।। १५ ।।

अब श्री श्यामाजी महारानी की बात बताती हूं, जिन्होंने रसूल साहब की बात की गवाही दी। मेरे दिल को उनसे ज्ञान प्राप्त हुआ। अक्षरधाम, परमधाम दोनों की जानकारी पाई।

Nijanand App

जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए।
सो ए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाह।। १६ ।।

जहां जबराईल नहीं जा सका, वह सभी ठिकाने श्री श्यामाजी महारानी की कृपा से देखे।

हौज जोए आई नजरों, और नूरजलाली हद।
इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद।। १७ ।।

हौज कौसर, जमुनाजी और अक्षरधाम की सीमा की जानकारी श्री श्यामाजी महारानी के ज्ञान से और मुहम्मद साहब के कुरान और हदीसों से मिली।

और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत।
ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत।। १८ ।।

मूल-मिलावा के अन्दर जो बातें हुई, वह सब इशारतों में कही हैं। इनकी गवाही श्री श्यामाजी और मोमिनों के बिना दूसरा और कौन खोल सकता है?

देखी सूरत अमरद, तासों किया मजकूर।
सो ए दुनीमें महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर।। १९ ।।

मुहम्मद साहब ने श्री राजजी महाराज के किशोर स्वरूप को देखा और बातें कीं। यह सब बातें दुनियां में आकर मेयराजनामे में जाहिर की हैं।

दुनियां चौदे तबकमें, जाकी तरफ न पाई किन।
सो सब मेयराजमें, रसूलें करी रोसन।। २० ।।

चौदह तबक की दुनियां में परमधाम की खबर किसी को नहीं थी। यह सब बातें रसूल साहब ने मेयराजनामे में जाहिर की हैं।

पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल।
और क्यों समझें ए माएने, जो इन राहमें जात हैं जल।। २१ ।।

इस वाणी को वही समझ सकता है जो इस मंजिल तक पहुंचा हो। दुनियां वाले इस बात को कैसे समझेंगे जो इस रास्ते में ही समाप्त हो जाते हैं।

इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत।
ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखिरत।। २२ ।।

मूल-मिलावा के अन्दर श्री श्यामाजी पहुंचीं। वह भी मुहम्मद की मलकी सूरत हैं। श्री राजजी महाराज ने इनको बड़ी रूह कहा है। अब आखिरी जमाने के खाविन्द की शोभा इन्हीं को दी है।

महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेंहेंदी इमाम।
मार दज्जाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम।। २३ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि ईसा रूह अल्लाह आएंगे और इमाम मेंहेंदी आएंगे। वह संसार का कुफ्र मिटाकर एक दीन कायम करेंगे।

Nijanand App

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवें सब दिल।
ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल।। २४ ।।

एक दीन तभी होगा जब सबके दिल के संशय मिट जाएंगे। यह बड़ा काम श्री प्राणनाथजी के बिना सम्भव नहीं है, चाहे चौदह लोक मिलकर भी क्यों न आएं?

सो ए खिताब रूहअल्लाका, या महंमद सिर खिताब।
या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब।। २५ ।।

एक ही दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में सबको लाने का काम श्री श्यामाजी महारानी या हुकम के स्वरूप मुहम्मद साहब या इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज सब ग्रन्थों के रहस्यों को खोलकर करेंगे।

सोई खोले ए माएने. जिन लई मजल इन ठौर।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और।। २६ ।।

जो परमधाम तक पहुंच गया है, वही इन ग्रन्थों के छिपे रहस्यों को खोल सकता है। यह मूल-मिलावा परमधाम का ज्ञान है। इसे दूसरा कह नहीं सकता, जल मरेगा।

ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी ऐसा दुस्मन।
पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन।। २७ ।।

यह जो आदम की औलाद आदमी हैं, उनके दिल झूठे हैं। जिन पर शैतान अबलीस की बादशाही है। यह सब निराकार के पूजक हैं, इसीलिए यह कुरान की वाणी कैसे सुन सकेंगे?

हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब।
झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामा महारानी और कुलजम सरूप की वाणी की जब पहचान हो जाएगी, तब सच्चे मोमिन और झूठे दुनियां वाले जो दोनों एक साथ रह रहे हैं, एक पल में अलग-अलग हो जाएंगे।

ए सब पैदा महंमदके नूरसे, अव्वल आखिर सोई नूर।
एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर।। २९ ।।

यह सारी सृष्टि मुहम्मद के नूर से पैदा हुई है। अव्वल से भी रसूल मुहम्मद आए। बीच में मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए। आखिर में हकी सूरत मुहम्मद श्री प्राणनाथजी आए। अब सब दुनियां को मुहम्मद की तीनों सूरतों की पहचान होगी। मुहम्मद के नूर के बिना दुनियां एक पल के लिए भी नहीं रह सकती।

सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ जहूर।
झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अर्स ऊगे सूर।। ३० ।।

आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज कुरान के छिपे रहस्यों को खोलेंगे। तब झूठ दूर हो जाएंगे और अज्ञान का अंधेरा मिट जाएगा और फिर सभी कुलजम सरूप की वाणी के तेज को देखेंगे।

सब की जुबांसे महंमद, सब पर करसी हिदायत।
ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझे दम गफलत।। ३१ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज सबको सबकी बोली में समझाएंगे। यह बातें सब धर्मग्रन्थों में लिखी हैं, पर दुनियां के झूठे जीव नहीं समझते।

Nijanand App

अव्वल आखिर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम।
हकें मासूक कह्या महंमद को, सो क्यों समझे दुनी आम।। ३२ ।।

शुरू में, बीच में और आखिर में मुहम्मद की बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतें हैं। इन वचनों को सब दुनियां समझती है, परन्तु श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी को माशूक क्यों कहा, इसकी समझ दुनियां वालों को नहीं है।

जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम।
सो बात समझे हक अर्सकी, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम।। ३३ ।।

जितने भी रूह मोमिन हैं और जिन्हें कुलजम सरूप की वाणी मिल गई है, वह ही श्री राजजी महाराज और परमधाम की बातों को समझते हैं, क्योंकि इनके दिलों में बिना कलम के लिखा है।

और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े।
सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे।। ३४ ।।

और जाहिरी दुनियां वाले जो झूठे दिल के हैं, उनके दिल को नाचीज मुर्दा, गोश्त का टुकड़ा कहा है। वह क्या सुनेंगे और क्या कहेंगे? यह अन्धे हैं, बहरे हैं और मुर्दे हैं।

दिल मोमिन अर्स कह्या, उतरे भी अर्स से।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में।। ३५ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। वह उतरे भी परमधाम से हैं। इनके दिलों में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए इनकी सिफत यहां की जबान से नहीं कही जा सकती।

कह्या दुनी निकाह अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास।
जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास।। ३६ ।।

कुरान में लिखा है कि दुनियां की शादी शैतान (नाबूद अबलीस) से हुई है। इसलिए झूठे दिल वाले इस शैतान की औलाद हैं जो आदम (आदि नारायण) की औलाद हैं, वह सब निराकार के पूजक हैं।

कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमिन।
हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन।। ३७ ।।

श्री श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं और मोमिन श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं, इसलिए श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें एकतन हैं। इनकी महिमा के लिए कोई शब्द ही नहीं है।

कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर।
नाजी को हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर।। ३८ ।।

मुहम्मद साहब के तिहत्तर फिरके कहे हैं, जिनमें एक मर्द मोमिनों का नाजी फिरका और बहत्तर नारी (दोजखी) कहे हैं। नाजी फिरके को श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप की वाणी मिल गई है और वह दीन के सच्चे रास्ते पर चलते हैं।

और तफरका भए, चले कौल तोड़ कर।
दाएं बाएं चलाए दुस्मनें, मारे गए हक बिगर।। ३९ ।।

रसूल साहब के वचनों को तोड़कर और सब बहत्तर फिरकों में अलग-अलग हो गए। उनके पास सच्चा खुदाई ज्ञान कुलजम सरूप न होने से शैतान अबलीस ने इन्हें कर्मकाण्डों में बांध दिया।

Nijanand App

मेयराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन।
सो आखिर ईसा इमामें, किए मेयराज में सब मोमिन।।४०।।

श्री राजजी महाराज का दर्शन केवल रसूल साहब को हुआ। और कोई दूसरा उनके पास नहीं जा सका। अन्त समय ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने सब मोमिनों को श्री राजजी की पहचान करा दी।

खूबियां आखिर बखत की, किन मुख कही न जाए।
खूबी कहिए तिन की, जो सब्द माहें समाए।।४१।।

यह आखिर के समय की खूबियों के सुख हैं, जिनका वर्णन इस जबान से कैसे करें? वर्णन तो उनका ही हो सकता है जो शब्द में आ सकें।

अव्वल जमाने के सैयद, और बड़े केहेलाए पैगंमर।
पर सो बराबरी कर ना सके, जो आई उमत महंमद की आखिर।।४२।।

पहले के जमाने के सब बड़े-बड़े ज्ञानी और पैगम्बर कहलाने वाले मुहम्मद साहब की उम्मत मोमिन जो आखिर में आए, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सका।

लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सब्द।
क्या समझें अव्वल कतार जो, दुनी बांधी जाए माहें हद।।४३।।

कुरान में सभी बातें इशारों में लिखी हैं। यह निराकार की पूजक दुनियां जो एक-दूसरे की नकल करके चल रही है, इन रहस्यों को कैसे समझ सकती है?

रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले।
आखिर अपने हुकम उठावहीं, मोमिन महंमद के।।४४।।

कुरान में लिखा है कि श्री श्यामा महारानी श्री राजजी के हुकम से मुर्दों को जिन्दा करेंगे और आखिर के समय में हकी स्वरूप इमाम मेंहेंदी साहब अपने हुकम से मोमिनों को जागृत करेंगे।

इन बिध लिख्या जाहेर, तो भी देखे न खुलासा।
सब बोले फना में रात को, किया उमतें फजर बका।।४५।।

कुरान में इस तरह से स्पष्ट लिखा है, फिर भी दुनियां वाले इस बात को नहीं देखते। सब इस झूठी दुनियां में ही अज्ञानता से घटा लेते हैं। अब मोमिनों ने कुलजम सरूप की वाणी से दुनियां की अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर सवेरा कर दिया।

जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखिर।
सो गिरो नाजी महंमद की, लिखे नामे याके फैलों पर।।४६।।

धर्मग्रन्थों में जो साहेबी बताई, वह सब आखिर में आने वाले मोमिनों के लिए ही है। यह मुहम्मद का नाजी फिरका है और इनकी रहनी के कारण ही सब उपाधियां मोमिनों के लिए लिखी हैं।

अव्वल आखिर कयामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का।
खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या।।४७।।

अव्वल से रसूल साहब से लेकर आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के स्वरूप तक, कयामत होने के वक्त तक, नबी के द्वारा शुरू किया गया ज्ञान बढ़ता ही गया। कुरान और हदीसों में लिखा है कि मुहम्मद के ज्ञान बिना कोई समय खाली नहीं रहा।

Nijanand App

ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कह्या जिनका दिल अर्स।
आखिर सोई नजीकी मोमिन, जो अर्स मता के वारस।।४८।।

यह मोमिनों की जाहिर उपमा है, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है। अन्त समय के मोमिन ही श्री राजजी महाराज के नजदीक होंगे, क्योंकि परमधाम की सारी न्यामतों के वारिस यही हैं।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हक सों जिन।
कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन।।४९।।

यह मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं। श्री राजजी महाराज ने इनसे वायदा किया था कि मैं तुम्हारे पास रसूल को भेजूंगा जो तुम्हें जागृत करेंगे।

और भेजोंगा फुरमान, सब इतकी हकीकत।
और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत।।५०।।

मैं कुरान में सब यहां की हकीकत लिखकर भेजूंगा। इन इशारतों और गुझ भेदों की सारी बातें मेरी श्यामा महारानी इमाम मेंहेंदी के तन से कुलजम सरूप के द्वारा तुम्हें बताएंगी।

दुनियां पैदा कलमें कुंन से, असल उनों जुलमत।
जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझसे निसबत।।५१।।

यह दुनियां जो कुंन शब्द कहने से पैदा हुई है, उसकी उत्पत्ति निराकार से है। इसलिए, हे मोमिनो! तुम इनसे मत मिलो। तुम्हारा सम्बन्ध श्री श्यामाजी और मुझसे है, ऐसा श्री राजजी कहते हैं।

तुम आपमें रहियो साहेद, और गवाही फरिस्ते।
मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए।।५२।।

तुम आपस में गवाह रहना और असराफील फरिश्ते को भी गवाह बनाया है। मैं भी तुम्हारी गवाही दूंगा। इन वचनों को तुम मत भूलना।

याद कीजो मेरे अर्स को, और निसबत हक हादी।
इलम देऊं मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की।।५३।।

तुम मेरे परमधाम को याद करना और इस सम्बन्ध को याद करना कि हम श्री राजजी श्री श्यामाजी के अंग हैं। मैं तुम्हारे पास कुलजम सरूप की वाणी भेजूंगा, जिससे तुम्हें जरा भी संशय नहीं रह जाएगा।

खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजी के कबूतर।
जिन मिल जाओ तिनमें, ओ तुम नहीं बराबर।।५४।।

मैंने यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। यह खेल बाजीगर के कबूतर के समान झूठा है। तुम उनसे मत मिल जाना। वह तुम्हारी बराबरी के नहीं हैं।

हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए।
तुम बका करोगे दम खेलके, पर सकोगे न आप उठाए।।५५।।

परमधाम में इसी बात की हंसी होगी कि मेरे कुलजम सरूप की वाणी से तुम जागृत हो जाओगे और संसार के जीवों को अखण्ड कर दोगे, पर स्वयं परमधाम में भी परआतम में जाग न सकोगे।

Nijanand App

ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार।
तुम जिन भूलो आप अर्स मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार।।५६।।

मैं तुम्हें ऐसा झूठा खेल दिखाऊंगा जिसमें तुम सावचेत (सतर्क) रहना। तुम अपने आपको, घर को और मुझे नहीं भूलना। मैं ही तुम्हारा खाविन्द हूं।

हम कबूं न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम।
हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़ें नहीं एक दम।।५७।।

मोमिनों ने कहा कि हम आपके चरण पकड़कर बैठेंगे और आपको कभी नहीं भूलेंगे। हम आपके ऐसे आशिक हैं कि हम आपको एक पल भी नहीं छोड़ेंगे।

तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक।।५८।।

तुम हमारे धनी हो और माशूक हो। हम तुम्हारे ऐसे आशिक हैं जिन्हें आप कुलजम सरूप निःसन्देह वाणी देंगे तो फिर आपको क्यों भूलेंगे?

ए तो बड़ी हांसी कोई खेलमें, जो ऐसी होए हमसे।
मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें।।५९।।

हमसे खेल में कोई ऐसी बड़ी भूल होने वाली है, जिससे परमधाम में बड़ी हंसी होगी। श्री राजजी महाराज हमसे वायदे कर रहे हैं, इसलिए हे सखियो! तुम आपस में गवाह रहना।

लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर।
अकल न पोहोंचे इनों की, सो भी लिख्या लिखन हारे यों कर।।६०।।

संसार के धर्मग्रंथों में इस तरह से साफ लिखा है। फिर भी यह संसार के जीव जो खेल के कबूतर के समान झूठे हैं, इस बात को नहीं समझेंगे। इन बातों में इनकी अक्ल ही नहीं पहुंचेगी। लिखने वाले ने यह भी साफ लिख दिया है।

सब्द लिखे जो बुजरकों, सो सब आखिरी उमत का।
रात सब्द सब फना के, सब्द आखिरी दिन बका।।६१।।

बड़े ज्ञानियों ने जो यह शब्द लिखे हैं यह आखिरी समय में आने वाली ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते हैं। अज्ञान के सभी शब्द झूठी दुनियां के हैं जो मिट जाने वाले हैं। कुलजम सरूप की जागृत बुद्धि की वाणी ही अखण्ड है।

सो ए बड़ाई सब उमतकी, जो कही महंमद की आखिर।
वह खावंद कहे खेलके, ए खेल के कबूतर।।६२।।

यह सब उपमा (बड़ाई) आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात सुन्दरसाथ की है। यह सुन्दरसाथ खेल के मालिक हैं और बाकी दुनियां खेल के कबूतर के समान है।

एता फरक कह्या जाहेर, तो भी करें इनकी सरभर।
वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर।।६३।।

दुनियां में और मोमिनों में इतना फर्क साफ लिखा है। फिर भी दुनियां वाले इनकी बराबरी करते हैं। दुनियां मुर्दे के समान है और मोमिन सदा अखण्ड हैं, परन्तु क्या करें? दुनियां वाले बिना अक्ल के बराबरी करते हैं।

Nijanand App

फुरमान ल्याया हक का, महंमद आया किन ऊपर।
एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखिर।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज का ज्ञान मुहम्मद साहब इनके वास्ते लाए हैं। इनकी जानकारी कयामत के वक्त तक किसी को नहीं हुई।

बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान।
बड़े उलमा आरिफ कहावहीं, पर पड़ी न काहू पेहेचान।।६५ ।।

अब ग्यारहवीं सदी बीत गई है और कुलजम सरूप की वाणी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी लाए हैं। दुनियां वाले जो बड़े, पढ़े-लिखे विद्वान कहलाते हैं उनको भी इसकी पहचान (जानकारी) नहीं हुई।

पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत।
कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत।।६६ ।।

कुरान को कौन पढ़ेगा? हकीकत का ज्ञान कौन लेगा? कुलजम सरूप की वाणी से कुरान के छिपे रहस्य कौन खोलेगा?

जोलों फुरमान खुल्या नहीं, तोलों रात है सब में।
एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादीने।।६७ ।।

जब तक कुरान के रहस्य नहीं खुले, तब तक सभी अंधेरे में भटक रहे हैं। अब कुलजम सरूप की वाणी कुरान के रहस्य खोलकर सवेरा करेगी। अब स्वयं श्री प्राणनाथजी महाराज इस वाणी को अपने हाथ में लेंगे।

कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी तफरका।
एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अर्स बका।।६८ ।।

रसूल साहब के वचनों को काफिर लोगों ने न मानकर टुकड़ों-टुकड़ों में बंट गए। रूह अल्लाह आकर इनके कुफ्र को मिटाएंगे। मतभेदों को मिटाएंगे। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जब कुलजम सरूप की वाणी जाहिर करेंगे तब सब एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में आएंगे और एक पारब्रह्म के पूजक बनेंगे।

ए अव्वल कह्या महंमद ने, आए ईसा मारसी दज्जाल।
साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल।।६९ ।।

मुहम्मद साहब ने शुरू में ही कहा था कि ईसा रूह अल्लाह आकर शैतान को मारेंगे और सबके दिल के संशय मिटाकर श्री राजजी महाराज के दर्शन कराएंगे।

इमाम इमामत उमतकी, करसी अर्स अजीम ऊपर।
ए होसी हैयाती सिजदा, तब हुई तमाम फजर।।७० ।।

आखिर में इमाम मेंहेंदी ब्रह्मसृष्टियों को श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर अखण्ड परमधाम पर सिजदा कराएंगे। जब यह सब परमधाम पर सिजदा करेंगे, तो ज्ञान का सवेरा होगा।

जो अर्ससे रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार।
कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार।।७१ ।।

परमधाम से जो रूहें उतरीं, उनमें श्यामाजी रूहअल्लाह सिरदार थीं। जिनसे श्री राजजी महाराज ने वायदा किया था कि मैं तुम्हारे वास्ते रसूल को भेजूंगा।

Nijanand App

इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान।
ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान।।७२।।

कुरान में इस तरह से साफ बताया है, लेकिन आज दिन तक किसी ने बताया नहीं। यह बात मोमिन ही बता सकते हैं जिनके ऊपर श्री राजजी महाराज ने कुरान भेजा।

खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखिर मेंहेंदी खिताब।
ए ले इलम आखिरी हकका, महंमद मेंहेंदी खोले किताब।।७३।।

रसूल साहब को आखिरी पैगम्बर का खिताब मिला। आखिरत का तमाम काम इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज करेंगे। यह कुलजम सरूप की वाणी लेकर कुरान के रहस्यों को खोलेंगे।

फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के।
रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए।।७४।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान अपने हाथ से लिखकर रसूल साहब के द्वारा श्री श्यामाजी महारानी के पास भेजा, परन्तु किसी को इसकी खबर नहीं हुई।

ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका।
एक नाजी बहत्तर नारी लिखे, पर किन पाया न खुलासा।।७५।।

रसूल साहब ने पहले ही फरमाया था कि मेरे वचनों को न मानकर जमात टुकड़ों में बंट जाएगी। एक नाजी फिरका होगा और दूसरे बहत्तर नारी फिरके, परन्तु उसकी जानकारी किसी को नहीं मिली।

कौल सोई तोड़ेंगे, जिनों होसी मजाजी दिल।
होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल।।७६।।

रसूल साहब ने कहा कि जिनके झूठे दिल होंगे, वही मेरे वचनों को तोड़कर अपनी बुजरकी के वास्ते अलग हो जाएंगे।

जाहेर लिख्या मिस्कातमें, मैं डरों पीछले इमामों से।
गुमराह करसी दुनी को, ऐसे बुजरक होसी आखिरमें।।७७।।

रसूल साहब ने मिस्कात में लिखा है कि मैं आने वाले अगुओं से डरता हूं। वह ऐसे अक्लमंद होंगे कि सारी दुनियां को सही रास्ते से भटका देंगे।

होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का।
लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या।।७८।।

इन अगुओं का तन आदमी का होगा, परन्तु दिल शैतान का होगा। यह शैतान खून की तरह उनके रग-रग में समाया होगा। यह बात हदीस में लिखी है।

तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर।
यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमिन बचाए फजर।।७९।।

उनके शरीर के चारों तरफ शैतान ने घेरा डाल रखा होगा। इस तरह से शैतान सारी दुनियां को खा गया। एक मोमिनों को ही श्री राजजी महाराज ने फजर के वक्त बचाया।

Nijanand App

भांत भांत आलम में, रसूलें करी पुकार।
बिन मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार।। ८० ।।

इस तरह से संसार में तरह-तरह से रसूल साहब ने पुकारा, परन्तु मोमिनों के सिवाय कोई समर्थ न हुआ जो उनकी बातों को सुनकर सावचेत (सावधान) होता।

जिन विध लिख्या कुरानमें, हदीसों में भी सोए।
ए अर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंदसे उतरया होए।। ८१ ।।

जिस तरह से कुरान में लिखा है, उसी तरह से हदीस में लिखा है। इसे मोमिन ही समझ सकेंगे जिनके दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है और जो परमधाम से खेल में उतरे हैं।

आखिर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेंहेंदी इमाम।
इन विध खावंदी रूहअल्लाहकी, ए तीनों एक दीन करसी तमाम।। ८२ ।।

आखिरी पैगम्बर का खिताब रसूल साहब को और आखिरी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को और श्री श्यामा महारानी की इस तरह से रूह में सिरदारी—यह तीनों मिलकर सारी दुनियां को एक दीन में लाएंगी।

ए अव्वल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल।
ना बूझे हक हादी रूहोंकी, जो चौदे तबक मथें मिल।। ८३ ।।

रसूल साहब ने यह बात पहले ही कही, पर झूठे दिल वाले कैसे समझें? यह बातें श्री राजजी श्यामाजी और रूहों की हैं। यह चौदह तबक के लोग भी मिलकर नहीं समझ सकते।

केहे केहे रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए।
पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए।। ८४ ।।

रसूल साहब ने बार-बार कहा जिससे सभी बातें समझ में आ जाएं, पर इन बातों को श्री राजजी श्यामाजी और रूहें ही समझते हैं। इनके अतिरिक्त कोई दूसरा हो तो समझे?

कहे हादी हक इलम से, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान।
पर नफस मजाजी क्या जानहीं, जाके दिल आंख बुध न कान।। ८५ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि कुलजम सरूप की वाणी से सब बातें समझ में आ जाती हैं। पर झूठी इन्द्रियों वाले इसे कैसे जानेंगे? इनके न आंख हैं, न कान हैं, न बुद्धि है, न दिल है।

जो रूह होवे अर्स अजीम की, नूर बिलंद से उतरी।
सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहू परी।। ८६ ।।

जो रूहें परमधाम से उतरी हैं, वही इन इशारतों को समझती हैं। दूसरे और कोई समझ नहीं पाते।

ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सब समझी जाए।
जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए।। ८७ ।।

रसूल साहब ने साफ लिखा है जिससे बात सबकी समझ में आ जाए, परन्तु जिनके सच्चे दिल और बुद्धि नहीं है, वह श्री राजजी महाराज के वायदों को कैसे समझ सकते हैं?

Nijanand App

जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत।
सो हककी हादी बिना, और न कोई समझत।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मुखारबिन्द से स्वयं कहा कि मैं सब बातों को इशारतों में लिखता हूं, इसलिए श्री श्यामाजी महारानी के बिना हक श्री राजजी महाराज की बातों को और कोई नहीं समझता।

हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए।
या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए।। ८९ ।।

श्री राजजी महाराज की लिखी बातों को श्री राजजी समझते हैं या जो लाया है या जिनके वास्ते यह बातें (वाणी) आई हैं, वह समझते हैं। इनके बिना और कोई दूसरा हो तो समझे।

तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर।
क्यों समझे औलाद आदमकी, हक दिल छिपी खबर।। ९० ।।

इसलिए एक हजार नब्बे वर्ष तक अर्थात् सम्वत् १७३५ तक इन बातों को किसी ने नहीं समझा। यह श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें हैं। इनको आदम की औलाद संसार के आदमी कैसे समझ सकते हैं?

निकाह हवासों कही आदमकी, निकाह अबलीस औलाद आदम।
पूजे हवा खाहिस ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम।। ९१ ।।

बाबा आदम की शादी बीबी हौवा से हुई और आदम की औलाद की शादी शैतान अबलीस से हुई। यह आदम की औलाद है इसलिए निराकार के पूजक हैं। बड़े-बड़े बुजुर्ग और सयानों का भी यही हाल है कि वह भी निराकार के पूजक बने हैं।

तो रही छिपी बीच फुरमान के, निकाह अबलीस सोहोबत अकल।
सो क्यों पावें मगज मुसाफ का, कहे मुरदे मजाजी दिल।। ९२ ।।

आदमी की शादी अबलीस शैतान के साथ होने से उनकी अक्ल से कुरान की बातें अलग रहीं। यह मुर्दा (झूठे) दिल कुरान के छिपे रहस्य कैसे समझ सकते हैं?

जिन गेहूं खाया कौल तोड़के, आदम तिन नसल।
सो क्यों पावे रमूजें हककी, जो लिख्या अर्स असल।। ९३ ।।

बाबा आदम ने खुदा के हुकम को नहीं माना और गेहूं को खाया, इसलिए उसकी औलाद (सब आदमी) खुदा का हुकम न मानने वाले हैं। यह गुप्त बातें जो इशारतों में लिखी हैं, को कैसे समझ सकते हैं?

ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल।। ९४ ।।

श्री राजजी महाराज से रसूल साहब रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी के वास्ते कुरान लाए। अब उसी कुरान के छिपे रहस्यों को रूह अल्लाह श्यामा महारानी अपने दूसरे जामा इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के नाम से कुलजम सरूप के द्वारा खोल रहे हैं, इसीलिए अब किसी तरह की भूल नहीं हो सकती।

Nijanand App

खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान।
मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान।। ९५ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने ग्यारहवीं सदी में कुरान के रहस्य खोले और शैतान को मारकर कयामत के निशान जाहिर किए और सबको एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाए।

इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर।
रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर।। ९६ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज, ईसा मसीह श्यामा महारानी और रसूल साहब तीनों मिलकर शैतान को मारेंगे और ज्ञान का सवेरा करेंगे। कल के दिन जो वायदा कयामत का किया था, वह बारहवीं सदी में कुरान की सब छिपी बातों को मोमिनों के बीच खोलकर जाहिर कर दीं।

काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर।। ९७ ।।

कयामत के वायदों को दुनियां वाले झूठा समझते थे। ग्यारहवीं सदी के अन्त में कयामत के निशान जाहिर होने से रसूल साहब की बातें सच्ची हो गईं।

कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल।
पर क्यों बूझें औलाद आदमकी, जिनकी अबलीस नसल।। ९८ ।।

रसूल साहब की बातों में से एक भी इधर-उधर नहीं हुई। पर यह झूठे दिल वाले आदमी कैसे समझें जो अबलीस की औलाद हैं।

सांचे कौल महंमदके, फिरवले सब पर।
जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर।। ९९ ।।

मुहम्मद साहब के सभी वायदे सबके ऊपर समय पर सही निकले। उन्होंने जो कुछ कहा था, सब हुआ, परन्तु काफिर लोग नहीं समझ सके।

दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम।
भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम।। १०० ।।

कुलजम सरूप की वाणी आने से सबको श्री राजजी महाराज के दर्शन हुए। मोमिनों की जागनी हुई और श्री राजजी महाराज के हुकम से ही संसार के लोगों को दोजख और बहिश्त, जैसे लिखा था, वैसे मिली।

कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने।
भूल परे ना किसी कौलकी, रसूलें कह्या तिनमें।। १०१ ।।

रसूल साहब की बहुत बातें पूरी हो गई हैं और बहुत अभी पूरी होनी हैं। रसूल साहब ने कुरान में जो कहा, उसमें किसी बात की भूल नहीं पड़ेगी।

निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब।
दाभ—तूल—अर्ज काफरों, स्याह मुंह करसी तब।। १०२ ।।

कुरान में जो कयामत के निशान लिखे थे, इनके बातूनी भेद खुल गए। वह अब सब जाहिर हो जाएंगे। दाभ-तुल-अर्ज जो जानवर कहे थे, वह यह काफिर ही हैं, जिनको विश्वास न हो उनके मुंह काले होंगे।

Nijanand App

जब खोले मगज मुसाफ के, द्वार हकीकत मारफत।
एही दिन ऊगे होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत।। १०३ ।।

जब कुलजम सरूप की वाणी से कुरान के छिपे रहस्यों को खोल दिया, तो ज्ञान का सूर्य उदय हो गया। अब दुनियां कयामत को देखेगी।

महामत कहे ए मोमिनों, जिन जागी भूलो कोए।
राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए।। १०४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! कुलजम सरूप की वाणी से अब जागकर मत भूलो और इश्क लेकर परमधाम के रास्ते पर चलो जिससे खेल में और परमधाम में मान मिले।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २१७ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ॥

॥ प्रकरण ॥ ५०३ ॥ चौपाई ॥ १८२२७ ॥

॥ छोटा कयामतनामा सम्पूर्ण ॥

Nijanand App